International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 1, Jan.-Feb. 2023, pp: 441-444 www.ijhssm.org

नन्द किशोर आचार्य के पुराख्यान परक नाटक : प्रयोग कं संदर्भ में

डॉ. जिनिथ निर्मला बेक
पोर्टब्लेयर
अंडमान निकोबार द्वीप, भारत

Date of Submission: 01-02-2023 Date of Acceptance: 10-02-2023

प्रस्तावना

भारतीय मनीषा और तत्व चिंता को आख्यान तथा मिथक द्वारा अभिव्यक्त करने का जैसा प्रयास पुराणों के हुआ है। वैसा किसी अन्य ग्रन्थ के द्वारा नहीं हुआ है। महाभारत एक विशाल ग्रन्थ है जो आख्यानों की विपुलता में पुराणों का समकक्ष कहा जा सकता है। इन आख्यान कथानकों नें सर्वत्र साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट किया है और प्रारम्भ से ही इन्हीं कथा – सन्दर्भो और मिथकों का आश्रय लेकर महाकाव्य,खण्डकाव्य और नाटक लिखे जाते रहे हैं।

भारतीय साहित्य में पुराख्यान अथवा पौराणिक कथा का प्रयोग होता रहा है। "पाश्चात्य काव्य चिन्तक अरस्तू ने ट्रेजडी के कथानक के लिए पुराख्यानमूलक कल्पनामूलक व इतिहासमूलक तीन प्रकार के स्वीकृत कथानकों में पुराख्यामूलक कथानक का आधार सर्वोत्तम माना है।"[1] वास्तव में पुराख्यान रचनाकार की कल्पना का वह मूर्त रूप है जो उसके व्यापक क्षेत्र को व्यक्त करने के लिए अतीत के उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता है। पुराख्यान के माध्यम से व्यक्त भावनाएँ ह्रदय को प्रभावित करते हुए सीधे सत्य को आत्मसात कराती है। साहित्य में प्रयोग शब्द का उपयोग नाटक में अभिनय के लिए हि किया जाता था। समकालीन साहित्यकार स्वयं को समाज के सन्दर्भो में पूर्णरूपेण देखने का प्रयत्न करता है। प्रयोग इन बदलती परिस्थितियों को पहचानने में, उनके रागात्मक संबंधों को सम्बल अभिव्यक्ति देने में साधन रूप है।

नन्दकिशोर आचार्य राजस्थान के महत्वपूर्ण नाटककारों में से हैं जिन्होने अपने प्रांत की सीमाओं से निकल कर हिन्दी नाट्य जगत में अपनी पहचान बनाई है। उनके नाटक 'देहान्तर' और 'हस्तिनापुर' पुराण की कथा पर आधारित है। आचार्य ने प्रथम नाटक 'देहान्तर' के माध्यम से एक अनुद्घाटित मनोभूमि का उद्घाटन कर एक नयी खोज प्रस्तुत की है, वहीं दूसरी ओर ययाति के इतिवृत्त को एक नयी व्याख्या देने की कोशिश की है। द्वितीय नाटक **'हस्तिनापुर'** में शुभा के चरित्र के माध्यम से स्त्री त्रासदी तथा नारी की स्वतंत्र व्यक्तित्व की तलाश को नए रूप में उजागर किया है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 1, Jan.-Feb. 2023, pp: 441-444 www.ijhssm.org

देहान्तर : नन्दकिशोर आचार्य कृत 'देहान्तर' (1983) का आधार पौराणिक है। पुराण में इस कथा का वर्णन मिलता है पर बदले हुए रूप में । यह नाटक महाभारतकालीन पात्रों ययाति शर्मिष्ठा देवयानी एवं पुरू को लेकर चला है। लेखक ने समकालीन नर–नारी संबंधों की तीखी अभिव्यक्ति के लिए बिन्दुमती तथा पुरू के संदर्भो को कल्पनाशीलता से रचा है। नाटक का कथ्य और शिल्प दोनों में आधुनिकता के दर्शन होते हैं जिसमें दैहिक सम्पूर्णता के सुख की खोज में रत समकालीन मानव की स्थिति को मूर्त कर देती है।

कथानक के रूप में राजा ययाति के मिथक को लिया गया है, जिसका संदर्भ मन की अतृप्त इच्छा है। **'देहान्तर'** का ययाति अपने प्रतीकात्मक बिन्दु पर भोगवादी दृष्टि में डूबे मानव की समकालीन नियति को सम्प्रेषित करता है। ऐसी नियति जो सनातन है। इसके विपरीत में शर्मिष्ठा भोग के स्थान पर प्रेम की महत्ता प्रतिपादित करती है"[2] दैहिक सुख में विश्वास रखने वाला ययाति असमय बुढ़ापा की स्थिति में अपने बेटे पुरू का यौवन प्राप्त कर लेता है और पुरू वृद्ध के रूप में प्रकट होता है। पुत्र के यौवन से उदीप्त ययाति का पौरूष एक दुस्सह विसंगति को जन्म देता है और "पति–पत्नी, पिता–पुत्र और माता–पुत्र के भावात्मक और दैहिक संबंधों पर तीखे मारक प्रश्नों की बौछार करता है।"[3]

यहीं से नाटक का द्वन्द्व शुरू होता है। शर्मिष्ठा, ययाति में अपने पुत्र पुरू के पौरूष को देखती है। शर्मिष्ठा माँ भी लगती है और वृद्व पुरू की सेवा में रत पत्नी भी लगती है। उसे इन समस्त स्थितियों से वितृष्णा होने लगती है। वह कहती है– "मैं वृद्ध और अशक्त चकवर्ती के सेज पर जा सकती थी लेकिन कोई घोर व्याभिचारिणी भी अपने पुत्र की सेज पर नहीं जाएगी ......।"[4]

शर्मिष्ठा का विद्रोह भी पुरूष मानसिकता के विरूद्ध है। ययाति द्वारा बेटे से उधार लिए यौवन ने शर्मिष्ठा **को संत्रस्त** मानसिकता की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। उसे अपने पति में अपना पुत्र और अपने पुत्र में अपना पति दिखाई देता है। शर्मिष्ठा का विपरीत परिस्थितियों में अपने आप होना ही अर्थात उसका अस्तित्व ही उसके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना तथा चुनौती है जो स्त्री की परिस्थितिजन्य विवशता को रेखांकित करता है। जब ययाति यौवन का उपभोग करने की इच्छा से अपने पुत्र पुरू का यौवन लेकर रानी शर्मिष्ठा के पास जाते हैं तो वह ययाति से व्यंग्यात्मक लहजे में कहती है –

" शर्मिष्ठा – नहीं आर्य ! मुझे क्षमा करें।
ययाति – यह हमारा तिरस्कार है।
शर्मिष्ठा – नहीं ! देव यह मेरा अधिकार है।"[5]

भानु भारती का कथन है कि **'देहान्तर'** के केन्द्र में शर्मिष्ठा का अन्तर्द्वन्द्व है। पति और बेटे की गड्डमड्ड में वह एक माँ और पत्नी के रूप में जिस त्रासदी को भोगती है वही 'देहान्तर' की विषय वस्तु है। पिता और पुत्र के बीच मनोवैज्ञानिक संबंधों को तो अक्सर व्याख्यायित करने की कोशिश की जाती है, परन्तु एक स्त्री उनमें कैसे प्रभावित होती है यह जानने का अवकाश तो 'देहान्तर' ही हमें देता है।"[6]

नाटककार ने बिन्दुमती को ययाति का मोहभंग करने के लिए नाटक में कल्पनाशीलता से उपस्थित किया है। उसका चरित्र आधुनिक नारी के रूप में दृष्टिगोचर होता है। वह प्रेम के स्थान पर आमोद – प्रमोद को महत्व देकर नारी के विचलित स्वभाव को मर्त करती है। बिन्दुमती शर्मिष्ठा से कहती है – "मेरा तो स्वभाव है विनोद का तुम जानती हो।"[7] उसके संवाद में 'स्त्री स्वातंत्र्य' के स्वर भी मुखर होते है वह ययाति से कहती है – "बिन्दु – आपने उनसे प्रेम माँगा ही कब? आप तो सदैव देह की माँग करते रहे। ययाति – मेरा अधिकार है यह। मैं उसका पति हूँ। बिन्दु – अधिकार की भाषा लालसा होती है प्रेम की नहीं।"[8] बिन्दुमती पुरू के वीरता व शौर्य के प्रति आकृष्ट होकर आती है किन्तु पाती है कि पुरू वृद्धावस्था में है। बिन्दुमती ययाति का वरण तो कर लेती है किन्तु पुरू को न पाकर निराश वापस चली जाती है। बिन्दुमती का यह टूटन ययाति के आत्मविश्वास की टूटन का भी साक्षात्कार कराती है। इसी के साथ ययाति अंत में वृद्धावस्था ग्रहण कर लेता है।

'देहान्तर' नाटक पौराणिक कथा के माध्यम से मानव की भोगवादी कामना व कुंठा के नये आयाम को चित्रित करता है। ययाति के माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व या अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा होता है। दैहिक सुख की खोज में रत ययांति और बिन्दुमती के माध्यम से देहान्तर मानव की शाशवत असंतुष्टि को व्यंजित करता है। नाटक की मूल समस्या मानवीय संबंधों की पहचान है। देहान्तर में इस पहचान की खोज का माध्यम देह प्रतीत होता है। ययाति के व्यक्तित्व या अस्तित्व पर प्रश्न पौराणिक कथा में भी उभरता है, परंतु आचार्य के नाटक में उसकी मीमांसा वर्जित संबंधों की ओर इशारे के साथ होती है। नाटक गहरे तनावपूर्ण नाटकीय अनुभूतियों से गुजरता हुआ पौराणिक परिवेश की उपस्थिति में भी समकालीनता नज़र आता है।

हस्तिनापुर : नन्दकिशोर आचार्य का नाटक हस्तिनापुर (1996) महाभारत के आख्यान से उत्प्रेरित है। नाटककार ने महाभारत की घटनाओं के आधार पर उसके एक प्रसंग सें संबंधित संदर्भो को नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। पूरा नाटक शुभा – कुन्ती, सत्यवती–भीष्म, भीष्म–अम्बिका, व्यास–अम्बिका के बीच तर्क – प्रतितर्क से अक्रांत है। नाटककार ने कथ्य को ज्वलंत रूप देने के लिए काल्पनिक चरित्र शुभा (विदुर की माँ) की सृष्टि की है। नाटक का कथ्य स्त्री त्रासदी है। नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व की तलाश करती है, परन्तु पितृसतात्मक व्यवस्था, सामाजिक रूढ़ि और धार्मिक जड़ता से दब जाती है। इसी मर्मयुक्त पीड़ा का सजीव एवं साकार चित्रण हुआ है।

सत्यवती अपने पुत्रों की मृत्यु के बाद भीष्म पर विवाह करने का दबाव डालती है ताकि कुरूवंश को एक योग्य उतराधिकारी मिल सके। जब भीष्म अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते हैं, तब नियोग के लिए माँ और बेटे द्वारा विकल्प ढूढ़ा जाता है। अंततः माँ, बेटे की सलाह के बाद कृष्ण द्वैपायन व्यास से अम्बिका का नियोग कराकर सन्तान प्राप्ति का उपाय खोजा जाता है। अम्बिका इसका विरोध करती है और वह अपनी जगह शुभा दासी को भेज देती है। अम्बिका और भीष्म का संवाद पुरूष प्रधान समाज में 'स्त्री स्वातंत्र्य' पर तीखा प्रहार करता है –

"भीष्म – यह कामना और प्रेम का प्रश्न नहीं था, अम्बिका 'यह धर्म पालना की बात थी।
अम्बिका – यही है क्या धर्म ? बिना इच्छा के अपने को सौपना ?"[9]

कृष्ण द्वैपायन व्यास और शुभा के नियोग से विदुर का जन्म होता है और इसी योग्य पुत्र के लिए बाद में शुभा को भीष्म और सत्यवती से संघर्ष करना पड़ता है वह व्यास से प्रश्न करती है – "स्त्री की कोई स्वतंत्र अस्मिता नहीं है, प्रभु वह भी अपने क्षेत्र की तरह सम्पत्ति है।"[10]

विदुर को दासी का पुत्र माना जाता है और उसे राज्याधिकार से वंचित रखा जाता है। शुभा अपने पुत्र विदुर के लिए राज्य सत्ता ही नहीं चाहती बल्कि अपनी पीड़ा शमन के लिए सैद्धान्तिक हल चाहती है। " नाटककार ने विदुर की माँ के रूप में शुभा की कल्पना की है जिससे नाटक की हर स्त्री और पुरूष पात्र जुड़ते है और अपनी समस्याओं का तत्काल उचित समाधान पातें हैं।"[11]

नाटककार ने नारी त्रासदी को नए सन्दर्भों में प्रस्तुत करने के लिए शुभा को कल्पनाशीलता से रचा है। प्रारम्भ में वह सूत्रधार के रूप में काम करती है, लेकिन बाद में केन्द्रीय चरित्र के रूप में परिवर्तित हो जाती है। "नाटककार ने शुभा के माध्यम से गहरे जुड़ाव को रेखांकित किया है। क्योंकि परिस्थितियों की काल की, वही वक्ता है, भोक्ता है।"[12] पूरी कथा उसके माध्यम से सामने आती है लेकिन वह सिर्फ अपने विचारों को व्यक्त ही नहीं करती बल्कि भोगती भी है। यह नाटक स्त्री के अनचाहे समर्पण, शूद्र के अधिकार के कई सवालों को उभारने का प्रयास किया गया है। शुभा स्त्री के साथ दासी भी है। इस रूप में यह नाटक एक दासी पात्र के माध्यम से आज की नई सामाजिक राजनीतिक स्थितियों में प्राप्त आधुनिक विवेक का उपयोग करते हुए अतीत की कोख से वर्तमान के सामाजिक सवालों को जन्म देता है। "नंदकिशोर आचार्य का कथन है कि शुभा का चरित्र भी रूढ़ स्त्रीवादी चरित्र नहीं है। वह पुरूष का भी सम्मान करती है, व्यास के प्रति भी उसके मन में गहन आस्था और सम्मान है, क्योंकि व्यास के लिए भी वह एक दासी मात्र नहीं है, वह एक स्त्री है जो स्वयं के लिए और अपने स्त्रीत्व के लिए सम्मान चाहती है। चाहे वह परिवार में हो समाज में हो या राजनीति में।"[13]

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 1, Jan.-Feb. 2023, pp: 441-444 www.ijhssm.org

समाज के भीतर वर्णव्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक विषमता की जड़े बहुत पुरानी और गहरी है, जिनमें स्त्री की पीड़ा का सवाल और भी गंभीर हो जाता है। "वह उन श्रणों को दोहराती है जिनमें राजनीति तथा सामाजिक मर्यादा के नाम पर बार – बार स्त्री मन की हत्या की गई, कभी नियोग के नाम पर तो कभी रक्तशुद्धि तथा वंश परंपरा के नाम पर।"[14] शुभा एक ओर नारी के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के प्रति बेहद जागरूक है तो दूसरी ओर राजत्व को रक्तशुद्धि या वंश परम्परा से जोड़ने की जगह उसके गुणाश्रित होने पर जोर देती है। शुभा के कथन में स्त्री स्वातंत्र्य की आवाज आती है –

"शुभा – दासी किसका क्षेत्र होती है ? महाराज भीष्म चुप क्यों है ?
उत्तर दें, दासी किसका क्षेत्र होती है ? किसका अधिकार होता है।
भीष्म – अपने स्वामी का ।"[15]

वह एक ऐसे हस्तिनापुर को जन्म देने की इच्छा संजोए हुए है जो पुरूष सत्ता एवं शास्त्रीय विधान की दुर्बलताओं से मुक्त हो।

इस दृष्टि से लेखक स्त्री की स्वतंत्र चेतना को उभारने का प्रयास किया है। यह नाटक सत्ता एवं पारिवारिक अधिकार बनाए रखने के लिए होने वाली साज़िशों का भंड़ाफोड़ करता है। संवाद अतीत की ही नहीं, आज की सामाजिक समस्याओं को भी बखूबी उजागर करते है। आचार्य "अपने नाटको में पौराणिक या ऐतिहासिक आख्यान को स्पष्ट तो करते हैं, परंतु उसमे बगैर किसी छेडछाड़ के उसके मूल प्रश्नों को भी उठाते हैं। इसी सें ये नाटक अपने स्वरूप के साथ पाठकों के समक्ष सकिय होकर कुछ प्रश्न भी रखते है।"[16]

मनुष्य की अपनी संपूर्णता में पहचान और व्यक्तित्व को रेखांकित करता है। 'हस्तिनापुर' नाटक सामाजिक रूढ़ि की आड़ में शोषित और दमित स्त्री की स्वतंत्र चेतना को विस्तार देता है। पुराख्यान परक नाटकों की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि कथ्य विश्लेषण के साथ कुछ प्रश्न भी खड़ा करते हैं। इनमें पौराणिक काल का यथार्थ चित्रंण मिलने के साथ – साथ सामयिकता की भी झलक मिल जाती है।

संदर्भ सूची

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ. नगेन्द्र (संपा.) पृ. 26
2. हिन्दी अनुशीलन – वर्ष 39, अंक 1–2, जनवरी – अप्रैल 1997, पृ. 175
3. मधुमती – जुलाई – अगस्त, 2000, पृ. 164, राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
4. देहान्तर – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 31, वाग्देवी प्रकाशन बीकनेर
5. देहान्तर – नन्दकिशोर आचार्य, पृ.36, वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर
6. मधुमती – जुलाई – अगस्त, 2000, पृ. 172, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
7. देहान्तर – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 29, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
8. देहान्तर – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 39, वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर
9. रंगत्रयी (हस्तिनापुर) – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 94 वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
10. रंगत्रयी (हस्तिनापुर) – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 89 वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
11. साठोत्तर हिन्दी नाटकार – लवकुमार नवलीन, पृ. 112 भावना प्रकाशन, दिल्ली
12. साठोत्तर हिन्दी नाट्य लेखन में प्रयोगशीलता – डॉ. मलय पानेरी, पृ. 163 निधि प्रकाशन, उदयपुर
13. मधुमती – जुलाई – अगस्त, 2000 पृ. 95, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
14. हिन्दी अनुशीलन – वर्ष 39, अंक – 1–2, जनवरी–अप्रैल, 1997, पृ. 176
15. रंगत्रयी (हस्तिनापुर) – नन्दकिशोर आचार्य, पृ. 106 वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
16. आजकल – अप्रैल 2002, पृ. 32